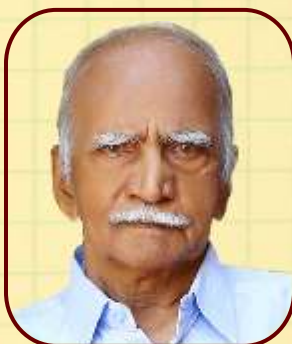


Padma Shri



SHRI P. NARAYANA KURUP

Shri. P. Narayana Kurup is a Malayalam poet and literary critic from Kerala. He has also chaired and helmed the operations of Thapasya (forum for art and literature), Margi (a centre for classical arts), and is considered a connoisseur and critic of Kathakali and Koodiyattam.

2. Born on 5th September, 1934 in Harippad, Alappuzha, Shri Narayana grew up in a culturally rich environment. Traditional art forms such as Kathakali performed in the precincts of the Shri Subramanya Swami temple had a strong influence on him. After completing his Masters in English literature, he joined the Central Information Service and served as Assistant Editor and later as Editor in the Publications Division.

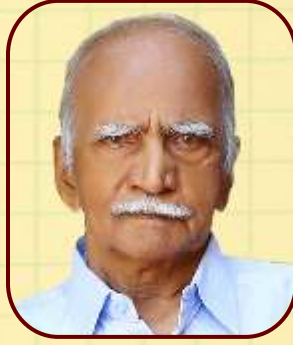
3. Shri Narayana was deputed to the Kerala Bhasha Institute in Thiruvananthapuram as research officer. Later, he worked as Consulting Editor in the Encyclopaedic Publication of Kerala Government. He was the editor of two encyclopedias (1985-1988) published by DC Books. He was a member of the governing body of Kerala Kala Mandalam (1986 to 1992), All India Vice-President of Sanskar Bharati, Agra (2000 to 2004) and a trustee of Bharat Bhavan, Bhopal (2004 to 2010). He was a member of the Film Advisory Committee from 2002 to 2008. He was re-appointed in 2015 and still holds the position.

4. Shri Narayana has authored more than 10 poetry collections including 'Astramalyam', 'Hamsadhwani', 'Nishagandhi', 'Apoornathayude Soundaryam' and 'Dashapushpam'. Some of his poems have a satirical tone that ruthlessly attacks the hollowness of urban living and the politics of opportunities. Another aspect, seen time and again, is a deep veneration and recreation of classical myths and images and as well as our spiritual traditions. The satirist in him penned some of the most powerful poems during the 1976-77 Emergency period. 'Kadalaasu Kappal', his first poetry collection published in 1962, was for children. 'Ayyappa Sankaran', one of the poems in it, became immensely popular and was included in Malayalam school curriculum.

5. Shri Narayana, besides poetry, has authored several significant works on satire and criticism. His noted works in literary criticism are 'Kaviyum Kavithayum' (two volumes), 'Vrithapadanam', and 'Kaavyabimbam' "Kaviyum Kavithayum." His work 'Kaviyum Kavithayum' is a critical study on poets which was included the graduate/post graduate curriculums by many universities. This work remains an in-depth analysis of the life and merits of six prominent Malayalam poetic voices of the fifties and sixties. He has translated many works into Malayalam including Goethe's Faust, Shakespearean plays and Hindi poems. He has also authored travel memoirs as well as biographies on Shri Jawaharlal Nehru and Shri Jayaprakash Narayan. Several of his works were the subject of Ph.D and M.Phil theses in various Universities.

6. Shri Narayana is the recipient of numerous awards and honours including Kerala Sahitya Akademi Award for Literary Criticism for 'Kaviyum Kavithayum' in 1986; Kerala Sahitya Akademi Award for Poetry for 'Nishagandhi' in 1991; Odakkuzhal Award, an Indian literary Award.

पद्म श्री



श्री. पी. नारायण कुरुप

श्री. पी. नारायण कुरुप केरल के एक मलयालम कवि और साहित्यिक समालोचक हैं। उन्होंने तपस्या (कला और साहित्य मंच), मार्गी (शास्त्रीय कला केंद्र) की अध्यक्षता तथा संचालन भी किया है और उन्हें कथकली और कूडियाट्टम का पारखी और समालोचक माना जाता है।

2. 5 सितंबर, 1934 को हरिप्पड, अलाप्पुझा में जन्मे, श्री नारायण सांस्कृतिक रूप से समृद्ध वातावरण में पले-बढ़े। उन पर श्री सुब्रमण्य स्वामी मंदिर के परिसर में प्रस्तुत किए जाने वाले कथकली जैसे पारंपरिक कला रूपों का गहरा प्रभाव पड़ा। अंग्रेजी साहित्य में स्नातकोत्तर करने के बाद, वह केंद्रीय सूचना सेवा में शामिल हो गए और प्रकाशन विभाग में सहायक संपादक और बाद में संपादक के रूप में कार्य किया।

3. श्री नारायण को केरल भाषा संस्थान, तिरुवनंतपुरम में अनुसंधान अधिकारी के रूप में प्रतिनियुक्त किया गया था। बाद में, उन्होंने केरल सरकार के विश्वकोश प्रकाशन में सलाहकार संपादक के रूप में काम किया। वह डीसी बुक्स द्वारा प्रकाशित दो विश्वकोशों (1985-1988) के संपादक थे। वह केरल कला मंडलम के शासी निकाय के सदस्य (1986 से 1992), संस्कार भारती, आगरा के अखिल भारतीय उपाध्यक्ष (2000 से 2004) और भारत भवन, भोपाल (2004 से 2010) के ट्रस्टी थे। वह 2002 से 2008 तक फिल्म सलाहकार समिति के सदस्य थे। उन्हें 2015 में फिर से नियुक्त किया गया था और अभी भी इस पद पर हैं।

4. श्री नारायण ने 'अस्त्रमाल्यम', 'हंसध्वनि', 'निशागंधी', 'अपूर्णनाथयुडे सौंदर्यम' और 'दशपुष्पम' सहित 10 से अधिक कविता संग्रह की रचना की है। उनकी कुछ कविताओं में व्यंग्यात्मक लहजा है जो शहरी जीवन के खोखलेपन और अवसरवादी राजनीति पर निर्ममता से प्रहार करता है। एक और पहलू, जिसे बार-बार देखा जाता है, वह प्राचीन मिथकों और छवियों के साथ-साथ हमारी आध्यात्मिक परंपराओं की गहनश्रद्धाभाव और मनोरंजन है। उनमें बसे व्यंग्यकार ने 1976-77 के आपातकाल के दौरान कुछ सबसे सशक्त कविताओं का सृजन किया। 1962 में प्रकाशित उनका पहला कविता संग्रह 'कदलासु कप्पल' बच्चों के लिए था। इसकी एक कविता "अयप्पा शंकरन" बेहद लोकप्रिय हुई और इसे मलयालम स्कूल के पाठ्यक्रम में शामिल किया गया।

5. श्री नारायण ने कविता के अलावा व्यंग्य और समालोचना पर कई महत्वपूर्ण रचनाएं लिखी हैं। साहित्यिक समालोचना में उनकी उल्लेखनीय रचनाएं 'कवियुम कवितायुम' (दो खंड), 'वृथपदनम', और 'काव्यबिंबम' "कवियुम कवितायुम" हैं। उनकी रचना 'कवियुम कवितायुम' उन कवियों के सम्बंध में एक आलोचनात्मक अध्ययन है जिन्हें कई विश्वविद्यालयों द्वारा स्नातक/स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में शामिल किया गया था। इस कृति में पचास और साठ के दशक के छह प्रमुख मलयालम कवियों के जीवन और गुणों का गहन विश्लेषण किया गया है। उन्होंने गोएते के फॉस्ट, शेक्सपियर के नाटकों और हिंदी कविताओं सहित कई कृतियों का मलयालम में अनुवाद किया है। उन्होंने यात्रा संस्मरण के साथ-साथ श्री जवाहरलाल नेहरू और श्री जयप्रकाश नारायण की जीवनी भी लिखी। उनकी कई रचनाएं विभिन्न विश्वविद्यालयों में पीएचडी और एम.फिल थीसिस का विषय थीं।

6. श्री नारायण को अनेक पुरस्कार और सम्मान प्रदान किए गए हैं जिनमें 1986 में 'कवियुम कवितायुम कुरेक्कुडी' के लिए साहित्यिक समालोचना का केरल साहित्य अकादमी पुरस्कार; 1991 में 'निशागंधी' के लिए कविता का केरल साहित्य अकादमी पुरस्कार; भारतीय साहित्यिक पुरस्कार ओडक्कुझल पुरस्कार शामिल हैं।